घृणा एक पूरी तरह से सफल हुए व्यक्ति को भी नीचे गिरा देती है। –अज्ञात।

विचार-प्रवाह

देहरादून, मंगलवार, 10 मई 2022

पेज थ्री
www.page3news.in

लोकतांत्रिक राजनीति का दायरा बढ़ाने की चुनौती

ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस ने लेफ्ट पार्टियों के वर्चस्व को तो खत्म किया, लेकिन राजनीति की इस शैली को बदलने का कोई खास प्रयास भी उसकी तरफ से होता नहीं दिखा। नतीजा यह कि जिस 'सिंडिकेट कल्चर' को कोसते हुए तृणमूल सत्ता में आई, वह और व्यापक हुआ।

मनोज सिंह।।

पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले में तृणमूल कांग्रेस के एक स्थानीय नेता की हत्या के बाद जिस तरह से आठ लोगों को जिंदा जलाकर मार डाला गया, उस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी सभी दोषियों को सजा दिलाने की बात कही है। प्रधानमंत्री ने यह भी कहा है कि इसमें केंद्र, राज्य सरकार की हर तरह से मदद करने को तैयार है। इसके साथ मोदी ने राज्य के लोगों से ऐसी हिंसक घटनाओं को बढ़ावा देने वाले लोगों को कभी माफ न करने की अपील की। प्रधानमंत्री के बयान को आधार बनाएं तो ऐसी घटना के बाद जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों से ऐसे ही संयत और गंभीर रुख की अपेक्षा की जाती है। राज्य में इस घटना को लेकर जिस तरह से मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और राज्यपाल जगदीप धनकड़ आमने–सामने नजर आए और दोनों में तीखी बयानबाजी हुई, वह वाकई निराशाजनक है। मुख्यमंत्री ने घटना की निष्पक्ष जांच का आश्वासन देते हुए भी इसके पीछे राज्य को बदनाम करने की संभावित साजिश का जिक्र कर दिया। ऐसे बयान उन आशंकाओं को मजबूती देते हैं कि कहीं जांच प्रक्रिया को खास दिशा देने की कोई मंशा तो काम नहीं कर रही। बहरहाल, बीरभूम की घटना पश्चिम बंगाल के लिए न तो नई है और न ही आश्चर्यजनक। संगठित हिंसा यहां की राजनीतिक संस्कृति का हिस्सा काफी पहले से बनी हुई है। तीन दशकों से ऊपर के लेफ्ट शासन के दौरान यहां राजनीतिक और सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में सीपीएम कार्यकर्ताओं का वर्चस्व स्थापित हो चुका था। अपने लिए स्पेस बनाने की विरोधी पार्टियों की

कोशिशों से उस दौरान प्रायः हिंसक तरीकों से ही निपटा जाता था। ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस ने लेफ्ट पार्टियों के वर्चस्व को तो खत्म किया, लेकिन राजनीति की इस शैली को बदलने का कोई खास प्रयास भी उसकी तरफ से होता नहीं दिखा। नतीजा यह कि जिस 'सिंडिकेट कल्चर' को कोसते हुए तृणमूल सत्ता में आई, वह और व्यापक हुआ। इसी का नतीजा है कि राज्य में सत्तारूढ़ पार्टी होने के बावजूद जब तृणमूल कांग्रेस के एक स्थानीय नेता की हत्या होती है तो उसके शोक संतप्त समर्थक भी इंसाफ के लिए पुलिस और प्रशासन का मुंह देखने के बजाय खुद कानून हाथ में लेकर संदिग्धों को तत्काल सजा देने का अभियान शुरू कर देते हैं।

ममता बनर्जी न केवल तृणमूल कांग्रेस की सबसे बड़ी नेता और राज्य की मुख्यमंत्री हैं बल्कि हालिया विधानसभा चुनावों में बीजेपी को पराजित करने के बाद राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष का संभावित साझा चेहरा भी मानी जा रही हैं। ऐसे में उनकी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। राज्य में कानून व्यवस्था की स्थिति दुरुस्त रखने के साथ ही हिंसा की संस्कृति खत्म कर वहां लोकतांत्रिक राजनीति का दायरा बढ़ाने की चुनौती भी उनके सामने है। इस दिशा में कारगर प्रयासों से ही राष्ट्रीय राजनीति में विकल्प के उनके दावे को प्रामाणिकता मिलेगी।

गुण या लक्षण

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। इन दश नियमों का पालन करना धर्म है। यही धर्म के दस लक्षण है। यदि ये गुण या लक्षण किसी भी व्यक्ति में है तो वह धार्मिक है। मनुष्य बिना सिखाये अपने आप कुछ नहीं सीखता है। जबकि ईश्वर ने अन्य जीवों को कुछ स्वाभाविक ज्ञान दिया है जिससे उनका जीवन चल जावे। जैसे रू– मनुष्य को बिना सिखाये न चलना आवे, न बोलना, न तैरना और न खाना आदि। जबकि हिरण का बच्चा पैदा होते ही दौड़ने लगता है, तैरने लगता है। अन्य गाय,भैंस,शेर,मछ्ली,सर्प,कीट–पतंग आदि के साथ है। अतः ईश्वर ने मनुष्य के सीखने के लिए भी तो कोई ज्ञान दिया होगा जिसे धर्म कहते है। जैसे भारत के संविधान को पढ़कर हम भारत के धर्म, कानून, व्यवस्था, अधिकार आदि को जानते है वैसे ही ईश्वरीय संविधान वेद को पढ़कर ही हम मानवता व इस ईश्वर की रचना सृष्टि को जानकर सही उन्नति को प्राप्त कर सकते है।

संपादकीय

गठजोड़ में या बाहर

फिलहाल एक बात साफ है कि अगले लोकसभा चुनाव में कई क्षेत्रीय दल एक गठजोड़ बनाकर मोदी से लड़ेंगे। अब यह कांग्रेस को तय करना होगा कि वह अपनी सीमित संभावनाओं के आधार पर इस गठजोड़ में शामिल होती है या किसी चमत्कार की आस में अकेले अपने चंद साथियों के साथ मैदान में उतरती है। यह अलग बात है कि विपक्ष के नेताओं में ही इस बात की होड़ लगी हुई है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में तीसरे मोर्चे का नेतृत्व कौन करेगा– ममता बनर्जी या अरविंद केजरीवाल या एम के स्टालिन। इतना साफ है कि कांग्रेस के लिए मोदी विरोधी मोर्चे के नेतृत्व की बहुत संभावनाएं बची नहीं हैं। ममता गोवा जैसे राज्य में सीधे हस्तक्षेप करती हैं। महाराष्ट्र में वह अपने लिए संभावनाएं तलाश रही हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार में साथी खुलकर उनके साथ आ रहे हैं। दूसरी तरफ अरविंद केजरीवाल गुजरात में अपनी पार्टी का आधार बढ़ाने का हर संभव प्रयास कर रहे हैं। पंजाब में चुनाव जीतने के बाद उनके हौसले बुलंद हैं। उनकी कोशिश यह जताने की है कि बीजेपी का एकमात्र विकल्प वही हैं। इसके बाबजूद जिन्हें लगता है कि कांग्रेस के बिना मोदी विरोधी मोर्चा संभव नहीं है, उन्हें अपने चश्मे की धूल साफ करनी चाहिए। कांग्रेस का यह गीत अब नहीं चलने वाला कि उसके बिना मोदी विरोधी किसी गठजोड़ की कल्पना नहीं की जा सकती।

कांग्रेस के सहयोगी दलों का ही यह विश्वास दरक गया है कि कांग्रेस के झंडे के तले रहकर मोदी को हराया जा सकता है। इसी कारण क्षेत्रीय दल कांग्रेस से दूरी बनाकर 2024 लोकसभा चुनाव की लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं।

राजनीति का नया मोड़

बृजेश शुक्ल।।

किसी भी राजनीतिक दल की केंद्रीय सत्ता जब कमजोर होती है तो उसके सहयोगी भी अपने लिए अवसर तलाशने लगते हैं। कांग्रेस के साथ कुछ ऐसा ही हो रहा है। तमिलनाडु में सत्तारूढ़ डीएमके पहली बार उत्तर भारत में अपने लिए संभावनाएं तलाश रहा है। दिल्ली में भव्य कार्यालय का निर्माण कर डीएमके प्रमुख और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन उत्तर भारत में भी अपनी पार्टी की पैठ बनाना चाहते हैं। लेकिन क्या केवल डीएमके ही इस तरह के प्रयास कर रहा है? कांग्रेस के सभी सहयोगी उस पर आई आपदा में अपने लिए अवसर तलाश रहे हैं। आपदा इसलिए क्योंकि कांग्रेस एक–एक कर अपने राज्य गंवाती जा रही है। क्या यह आश्चर्य पैदा नहीं करता कि कांग्रेस जिन राज्यों में हार रही है, उनमें कुछ में तो बीजेपी जीती है, लेकिन कई जगह क्षेत्रीय पार्टियों ने ही उसे किनारे कर दिया है? यह अलग बात है कि कांग्रेस की दुर्बलता के लिए और कोई नहीं, उसका केंद्रीय नेतृत्व ही जिम्मेदार है, जो अभी भी चमत्कार के भरोसे बैठा हुआ है।

कांग्रेस के सहयोगियों और अन्य बीजेपी विरोधी दलों को भी लगने लगा है कि कांग्रेस धीरे–धीरे इतनी कमजोर होती जा रही है कि नरेंद्र मोदी को टक्कर नहीं दे सकती। सवाल है

कि यह स्थिति क्यों पैदा हुई? क्यों ममता बनर्जी जनाधार वाले कांग्रेसी नेताओं को लेकर देश की सबसे पुरानी पार्टी को कमजोर कर रही हैं? क्या सचमुच भारत की राजनीति एक नए मोड़ पर आ खड़ी हुई है? कांग्रेस मुक्त भारत का जो नारा बीजेपी ने दिया था, उसे पूरा करने में कांग्रेस के सहयोगी दल ही जुट गए हैं? भारत की राजनीति में ऐसे अवसर कम ही आए, जब क्षेत्रीय दल पूरे देश की सत्ता पर काबिज होने के लिए इतने लालायित दिखे हों और वह भी उस पार्टी के नेताओं के बल पर, जिसके वे सहयोगी रहे हों, और अभी भी हों। कांग्रेस के ही एक नेता कहते हैं कि क्षेत्रीय दलों के अंदर दिल्ली की सत्ता पर काबिज होने की ललक इसलिए पैदा हुई है क्योंकि कांग्रेस नेतृत्व से वे निराश हो चुके हैं। उन्हें लगता है कि मोदी विरोधी राजनीति तब तक कामयाब नहीं हो सकती, जब तक उसकी अगुआई कांग्रेस कर रही है। कांग्रेस मोदी से नहीं लड़ सकती और उसकी इस कमजोरी का खामियाजा उसके सहयोगी भी भुगत रहे हैं। स्थितियां धीरे–धीरे कांग्रेस के हाथ से निकलती जा रही हैं। यह दावा अर्थहीन होता जा रहा है कि कांग्रेस के नेतृत्व के बिना मोदी को नहीं हराया जा सकता। पांच राज्यों के चुनाव के बाद यह बात और साफ हो गई है कि कांग्रेस के साथ खड़े होने वालों की संख्या न सिर्फ कम रह गई है बल्कि लगातार घटती जा रही है। कांग्रेस के सहयोगी दलों का ही यह विश्वास दरक गया है कि कांग्रेस के झंडे के तले रहकर मोदी को हराया जा सकता है। इसी कारण क्षेत्रीय दल कांग्रेस से दूरी बनाकर 2024 लोकसभा चुनाव की लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं।

वास्तव में ममता बनर्जी भले ही एक राज्य तक सीमित हों, लेकिन उन्होंने ऐसे नेताओं से तार जोड़ रखे हैं जो दिल्ली तक पहुंचने का रास्ता बना सकते हैं। एक तरह से इसकी पूरी रूपरेखा तैयार हो चुकी है। जिनसे साफ हो गया कि आने वाले दिनों में मोदी विरोधी राजनीति किधर जा रही है।

सूडोकु नवताल-5179

★☆☆☆☆ सरल

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5178 का हल

8	2	4		9	7	5	1	6
3	5	6	1	4	2	7	8	9
1	9	7	6	5	8	2	3	4
9	6	2	5	8	3	1	4	7
5	3	1	4	7	9	8	6	2
4	7	8	2	1	6	9	5	3
2	8	3	9	6	1	4	7	5
6	1	5	7	2	4	3	9	8
7	4	9	8	3	5	6	2	1

अपना ब्लॉग

फिर किस बात के लिए पार्टी

मोहन। गुजरात के ही दिग्गज कांग्रेसी नेता शंकर सिंह वाघेला जब कहते हैं कि गांधी परिवार के किसी सदस्य से वह बात नहीं कर सकते तो फिर किस बात के लिए पार्टी चलाई जा रही है! यकीनन कांग्रेस के सामने अब अंतिम लड़ाई आ गई है। राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के चुनाव यह साफ कर देंगे कि 2024 के लोकसभा चुनाव में वह किसी केंद्र में रहेगी भी या नहीं। अपनी प्रासंगिकता साबित करने के लिए उसे तीनों राज्य जीतने होंगे। दूसरी तरफ ममता ने भी उन्हें लेकर ऐसे ही भाव दिखाए। उन्होंने अखिलेश के लिए सभाएं कीं। इसी तरह बिहार में तृणमूल कांग्रेस राष्ट्रीय जनता दल के नेता तेजस्वी यादव से सीधे संपर्क में है। यह अनायास नहीं है कि वहां तेजस्वी यादव ने कांग्रेस से दूरी बना रखी है। इसी के तहत एसपी अध्यक्ष अखिलेश यादव ने ममता बनर्जी को बहुत ज्यादा अहमियत दी।